# गोपाल राजू की चर्चित पुस्तक, ''दूर करें दुर्भाग्य'' का संक्षिप्त सार–संक्षेप

**गोपाल राजू रुड़कवी**
**ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र**
**30, सिविल लाइन, रुड़को – 247667**
**फोन नं– 60111555**
**साइट : www.astrotantra4u.com**

## प्रभावशाली रति प्रिया लक्ष्मी यंत्र

यह अकाट्य सत्य है कि विधि की ओर से प्रत्येक जीव के भरण–पोषण का समुचित प्रबन्ध कर दिया जाता है। जीवन की वास्तविक आवश्यकताओं से जब हमारी माँग, इच्छा तथा हवस बढ़ने लगती है तब विधि का यह नियम असन्तुलित हो जाता है। इस असन्तुलन के परिणाम हम सब अपने दैनिक जीवन में निरन्तर देख रहे हैं और उसके दुष्परिणाम भोग भी रहे हैं। पिछले दो दशक में हवस के शिकार अनेक व्यक्ति मेरे संम्पर्क में आए। अन्ततः मैंने मनन किया कि इस वर्ग में कुछेक ऐसे भी हो सकते हैं जो कि वास्तव में मेरे उपायों को करने के पात्र हों। उनको मैंने जो उपाय करवाए वह फलीभूत हुए। महाराष्ट्र के एक उद्योगपति हमारे उत्तराखण्ड में नया कार्य लगा रहे थे। उनकी मूल समस्या यह थी कि अकारण कुछ न कुछ तकनीकी कमियों से वह वांछित उत्पादन नहीं कर पा रहे थे। इसका सीधा प्रभाव पड़ रहा था उनके यहाँ

कार्यरत श्रमिक वर्ग पर जो उनके कार्य में संलग्न थे और नित्य के मिलने वाले वेतन पर ही उनका गरीब परिवार पल रहा था। वास्तव में उनमें से अनेक श्रमिकों की स्थिति दयनीय थी। उद्योगपति के विषेश आग्रह पर उन्हें मैंने रतिप्रिया धनदायक यक्षिणी प्रयोग करवाया। इसका चमत्कारी प्रभाव यह रहा कि पूरे चार–पाँच माह तक फैक्ट्री में कोई भी तकनीकी कमी पूर्व की भांति नहीं आई। हमारी अगली बैठक में वह सज्जन पुनः उदास होकर गिड़गिड़ाने लगे। इस बार उनकी समस्या यह थी कि उत्पादन तो दस गुना बढ़ गया परन्तु उसकी पूर्ति की समस्या उस अनुपात में नहीं हो रही थी। सीधे–सीधे शब्दों में इस प्रकार समझ कि उनकी आय में दस–बारह प्रतिशत की दर से उन्नति हुई थी। श्रमिकों के वेतन, जो पिछले कई दिनों से लम्बित थे, वह भी नियमित रूप से देने लगे थे। कुल यह कि उनकी आय तीन–चार गुना बढ़ गयी थी। उन्हें अपेक्षा थी कोई चालीस प्रतिशत आय बढ़न की। यह और कुछ नहीं उनकी हवस थी। परिणाम यह हुआ कि छः माह बाद वह पुनः उपाय किए जाने से पूर्व वाली स्थिति में पहुँच गए।

इस घटना के बाद मैंने इस उपाय को लोगों पर करवाना ही बन्द कर दिया। प्रसंगवश इसकी लघु कहानी भी लिख दी। तथापि यहाँ लिखित हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम इस उद्देश्य से लिख रहा हूँ कि निःस्वार्थ कार्य करन वाला इसे जीवन में कभी ब्रह्मास्त्र की तरह प्रयोग कर परख ले।

अपने खून–पसीने की कमाई से एक चार इंच का वर्गाकार भोजपत्र तथा एक लोहे की जंग रहित साफ–सी सुई क्रय करके घर लाएँ। यह उपाय किसी भी दिन प्रातः साढ़े तीन बजे से चार बजे तक कर सकते हैं। नहाना–धोना, शद्धिकरण आदि किसी भी बाह्य प्रपंच की उपाय में आवश्यकता नहीं है।

आलस्य त्यागकर, शुद्ध मन और आस्था में गरम–ठण्डा सुखद बिस्तर त्यागकर आपको बस उठ जाना है। विषेश रूप से यह वह दिन हो जिससे पूर्व आप पूर्णतः समस्याओ से त्रस्त हो गए हों और चिन्ताओं में देर रात्रि तक आप निद्रापाश में जकड़ लिए गए हों। कोई भी ऐसी प्रातः जब थकान, त्रास और अन्ततः चिन्ताओं से आप रातभर सो न सके हों और उपाय के लिए उठने से पूर्व आप गहन निद्रापाश में चले गए हों, स्वाभाविक है ऐसी स्थिति उपाय क लिए चुननी है। सुविधा के लिए अलार्म

लगा लें। सब सामग्री पूर्व में तैयार रखें। पता नहीं किस दिन यह सुसंयोग आपके जीवन की प्रातः आ जाए।

प्रातः उठकर जब आप सामान्य हो जाएँ तो अपनी अनामिका और मध्यमा उंगली में साफ सुई को चुभोकर खून निकालें। इन उंगालियों से ही भोजपत्र पर रतिप्रिया धनदा यक्षिणी यंत्र अंकित करें। सुफल के लिए चुभन की थोड़ी–सी पीड़ा झेल लें। यह भाव रखें कि इस चुभन की पीड़ा नित्य–नित्य की होने वाली चुभनवाली पीड़ा से बहुत ही कम है। पूरे प्रयोग काल में रो–रोकर दीन बनकर माँ पार्वती अथवा सीता जी का ध्यान बनाए रखें। जब यंत्र तैयार हो जाए तो उसके सूखने तक प्रतीक्षा में बैठ जाएँ और दीन–हीन होकर तथा याचक बनकर माँ से प्रार्थना करते रहें। उपाय काल में आंसुओं को निरन्तर बहने दें। आंसुओं से आँखों के आगे धुंधलका छाने लगे ता भी अश्रु प्रवाह को न रोकें। इसी स्थिति में भाव विभोर होकर माँ का दशाक्षर मंत्र – **''ऊँ रं श्रीं हीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा''** जपते रहें। स्वाहा बोलते समय अश्रुमिश्रित उंगली से जहाँ से खून रिस रहा हो यंत्र को स्पर्श करें। मंत्र जप की कोई सीमा और संख्या नहीं है। जब तक आप दीन होकर रो रहे हैं अथवा जब तक उंगली से खून रिस रहा है, आप मंत्र जप करते रहें। जब अधीरता की इस मनोस्थिति से आप सामान्य हो जाएँ और आपका मन सोने का करने लगे तो पुनः आप सोने जा सकते हैं। प्रातः उठकर अपने नित्यकर्म से निवृत होकर इस यत्र को एक पारदर्शी पौलिथिन में रख लें। इसके साथ ही इसमें सात साबुत उड़द के दाने भी बन्द कर लें। यंत्र को अपने पूजास्थल में इस पकार स्थापित कर लें कि इसका शीर्ष भाग अर्थात् जहाँ आपने 6 अंकित किया है, ठीक पूरब दिशा की और रहे।

## रति प्रिया लक्ष्मी यंत्र

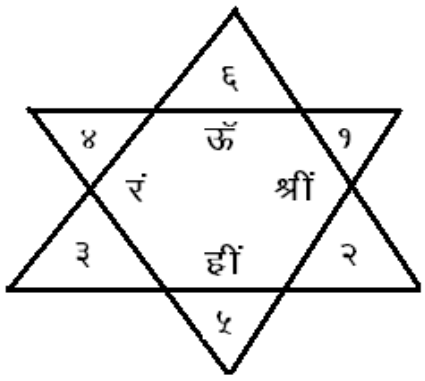

यत्र की नित्य पूजा अर्चना अपनी श्रद्धा विवेक से करते रहें। रतिप्रिया मंत्र का यथा समय जप करें। यंत्र के पूरब में अनामिका उंगली रखकर एक बार जपें– **'ऊँ ब्राहम्यै नमः'।** दक्षिण में यही उंगली रखकर कहें– **'ऊँ माहेÔवरयै नमः'।** पश्चिम में उंगली रखकर बोलें–**'ऊँ कौमार्य्यै नमः'।** उत्तर में ऐसे ही जपें–**'ऊँ वैष्णव्यै नमः'।** ईशान कोण मे उॅगली रखकर जपें– **'ऊँ वाराह्यै नमः'।** आग्नेय कोण में ध्यान कर जपें–**'ऊँ चामुण्डायै नमः'।** नैर्ऋत्य कोण में ध्यान करके कहें–**'ऊँ कौबैर्य्यै नमः'।** वायव्य दिशा में जपें–**'ऊँ वारूण्यै नमः'।** यंत्र के मध्य मे उंगली रखकर उसके ऊपर ध्यान केन्द्रित कर बोलें– **'ऊँ ब्राह्मयै नमः'।** इसी प्रकार नीचे उंगली रखकर नीचे का ध्यान कर बोलें–**'ऊँ अनंतायै नमः'।**

यंत्र के दसों दिशाओं मे अनामिका द्वारा स्पर्श करने के बाद यही उंगली अपने आज्ञाचक्र पर रखकर हल्का–सा दबाव दें, ध्यान में खो जाएँ। दीन बनकर माँ से अपनी इच्छा बोलें। मन भर आए तो आँसू छलकने दें, माँ आपका अवश्य ही अच्छा करेंगी।

## गोपाल राजू की चर्चित पुस्तक, ''दूर करें दुर्भाग्य'' का संक्षिप्त सार–संक्षेप

**गोपाल राजू रुड़कवी**
**ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र**
**30, सिविल लाइन, रुड़की – 247667**
**फोन नं– 60111555**
साइट : **www.astrotantra4u.com**

इच्छा पूर्ति रति प्रिया यंत्र
दुर्लभ घनदायक रति प्रिया यंत्र
रतिप्रिया यंत्र प्रयोग
अनुभूत घनदायक रति प्रिया यंत्र
कश्ट निवारक रति प्रिया यंत्र प्रयोग
दुलर्भ घन प्रदायक रति प्रिया प्रयोग